हमारी बात

आज ये आगे बढ़ते कदम हमारे
हटेंगे न पीछे मज़बूत कदम हमारे
मिलकर जब हम एकजुट हो जाएं
ताकत अपनी सौगुनी बढ़ाएं
मिलकर जब हम आवाज़ उठाएं
धरती, दिशाएं और आसमान गुंजाएं

चुप बैठे होती नहीं समस्याएं कम
निकालना होगा इनका हल स्वयं
होंगी नहीं ये एक दिन में हल
बाधाएं भी कभी न होंगी कम
खानी होगी हमें आज यह कसम
रुकें न हर हालत में बढ़ते कदम

दिन का तमाम शोर कर सकता नहीं कम
हमारी आवाज़ का पुरज़ोर असर
आज पहचान ली है हमने अपनी ताकत
पहचान ली है संगठन की भारी ताकत
छोटी नदियों से जुड़कर नदी की बड़ी धारा
कहां कहां न बहा ले जा सकती यह धारा

जलाया है हमने जागृति का दीपक
देखना, बुझने न पाए यह दीपक
एक दीपक से जलेंगे करोड़ों दीपक
तमाम रातों का अंधेरा कर सकता नहीं कम
हमारे इस दीपक की उज्ज्वल ज्वाला
चहुं दिशा में छाकर रहेगा इसका उजाला

—सुहास कुमार